IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भारतीय संगीत में काशी के मंदिरों की भूमिका"

डॉ0 सुजीत देवघरिया
एसोसिएट प्रोफेसर
मंचकला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

नेहा सिंह
(शोधार्थी)
मंचकला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

अत्यन्त प्राचीनकाल से लेकर अब तक अविच्छिन्न चली आ रही मान्यताओं के आधार पर काशी को विश्व की प्रमुखतम् धार्मिक नगरी होने का गौरव प्राप्त रहा है। जिसके प्रमाण में काशी में नगरी का प्रातः काल देवालयों, मन्दिरों आदि के प्रवेशद्वारों तथा राजा के दुर्ग के प्रवेशद्वारो के उपर अवस्थित नौबतखानों के उपर से ब्राहमुहुर्त की प्रभाती में बजती शहनाई की सुमधुर मंगल ध्वनि, देवालयों के निनादित घण्टे घड़ियाल, बृहत् नगाड़े व दाक्षिणात्य मन्दिरों में नागस्वरम्,मृंदगम् की संगीतमय स्वरलहरियों से होता रहा है, जो परमपावनी मां गंगा की निर्मल, स्निग्ध, धवल–धारा, एंव ब्रहमुहूर्त के मन्द–मन्द मलय समीर के लोकों के साथ अठखेलियों करती हुई, काशीवासियों को सुखद स्वप्निल निंद्रा से जगाकर दैनिक कार्यव्यापार में संलग्न होने के लिये प्रतिदिन निमंत्रित एव प्रेरित करती रही है।

काशी भारतवर्ष की ऐसी विलक्षण नगरी है, जहाँ सम्पूर्ण देश में बिखरी एवं मान्यताप्राप्त सभी धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय, पंथ, परम्परा की मिली जुली संस्कृति के दर्शन एक साथ होते है। यहाँ धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित 33 काट्टि देवताओं के मन्दिर स्थित रहे और विभिन्न मतों, पंथो, परम्पराओं के अनुयायियों के भी अनेक देवस्थान, कीर्ति मन्दिर आदि अपनी विशिष्टता, पवित्रता, शिल्प एवं वास्तुकला के अप्रतिम प्रतीक के रूप में सुप्रसिद्ध रहे है, जहाँ सभी अपनी प्राचीन परम्परा एवं शैली के अनुसार अपने देवी–देवताओं, आराध्यों की पूजा अर्चना करते है। यद्यपि दक्षिण भारतीय देवस्थानों की भांति देवता की पूजाविधि के निमित्त संगीतनृत्य की नियमित व्यवस्था के अन्तर्गत यहाँ के मन्दिरों में देवदासी नृत्यप्रथा प्रचलित नहीं थी, किन्तु नगर के अधिकांश प्रमुख मंदिरों में सांयकाल कीर्तन, भजन, नृत्य संगीत का भावपूर्ण द्रिव्य अलौकिक प्रदर्शन होता रहा।

देश के प्रतिष्ठित कलाकारों में अनेक ऐसे भाग्यशाली रहे है जिन्होंने इन मन्दिरों के सार्वजनिक आयोजनों मे भाग लेते–लेते ही न केवल अपनी साधना एवंकला में आकर्षण पैदा किया, अपितु उसी माध्यम से शनैः शनैः लोकप्रियता, सामाजिक प्रतिष्ठा एव कीर्ति भी प्राप्त की ।

काशी के ऐसे प्रमुख मन्दिरों में पंचगंगाघाट स्थित जड़ाऊ मन्दिर, जहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर प्रातः 10 बजे के लगभग आरम्भ संगीत जलसे में चोटी के कलाकार सम्मिलित होते थे, जिससे इस जलसे का समापन होते होते रात हो जाती थी जिसकी नगरवासी आतुरता से प्रतीक्षा करते थे।

काशी के सुप्रसिद्ध संगीत प्रेमी रईस श्री किशोरी रमण अग्रवाल के नीचीबाग–स्थित मदिर में श्रावणझूलनोत्सव, कृष्णजन्माष्टमी, होली एवं अन्य विशेष अवसरों पर काशी के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ–साथ विशिष्ट अभ्यागत कलाकारों के कला प्रदर्शन को निःशुल्क सुनने का अवसर मिलता रहता था। दुर्गामन्दिर, धूमावती देवी मन्दिर, बड़ी शीतला मन्दिर इत्यादि नगर के अनेक देवस्थानों के वार्षिक श्रृंगार पर संगीतज्ञों की कला साधन का रसास्वादन काशीवासियों को सहज प्राप्त रहा।

जिस प्रकार काशीपुरी अन्य सभी विद्याओं और कलाओं में किसी से पीछे नहीं है, उसी प्रकार भारतवर्ष की अत्यन्त प्राचीन, परम मनोहर, मोक्षदायिनी सुकठिन संगीत विद्या में भी अपना खास स्थान रखती है।देश की विलुप्त होती जा रही 'ध्रुपद गायकी' को पुनः प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय बनाने के सार्वभौम उदेश्य से दिल्ली, ग्वालियर,भोपाल, वृन्दावन आदि नगरों की भाँति काशी में भी 'भावप्रभापध संस्थान' की ओर से सर्वप्रथम सन् 1975 ई०वी में 'ध्रुपद मेला' का प्रथम आयोजन हुआ, जो अपने अभिनव प्रथम प्रयास में अत्यन्त सफल रहा है।आइये, पं० हरिदासजी कविराज के यहाँ जंगमवाड़ी मुहल्ले में चलिए, देखिये रविवार का दिन है, मित्रमंडल विराज रही है, मृदंग बज रहा है, एक सज्जन पद गा रहे हैं। इसके बाद दूसरे सज्जन गायेंगे और पद सुनने की इच्छा हो, तो वेणीमाधवजी के यहाँ रामघाट पर चलिये देखिये पंडितजी शिष्यवर्ग को शिक्षा दे रहे हैं। ध्रुपद का और प्रेम हो, तो मुलानाले पर प्रोफेसर पं० भोलानाथजी पाठक के यहाँ पधारिये, देखिये कैसा सादा निर्गर्व दृश्य है न कोई आडम्बर काशी में है, न कोई साजबाज। आप निवेदन करें, कृपा कर अमुक राग का ध्रुपद सुना दीजिये। यदि उनकी तबीयत मौजू हुई तो फौरन सुना देंगे। उनके गाने का ढंग अद्भुत है। ध्रुपद–प्रेमियों के लिये पाठकजी अपना जवाब आपही है। केवल गान के आप ज्ञाता है, सो बात नहीं; मृदंग बजाने में भी आप परम प्रवीण है। ध्रुपद के और भी कई गायके यहाँ हैं, पर स्थान– संकोच के कारण सबका परिचय नहीं दिया जा सकता।

अब चलिये जरा देव–मंदिरों के संगीत का आनन्द' लें। सर्वप्रथम यहाँ के सुप्रसिद्ध श्री गोपालमन्दिर का कीर्तन सुनिए। अहा, कैसा शान्तरस का साम्राज्य है! भावुक भक्तों का समाज है। मृदंग, तम्बूरा, झाँझ बजती है। मंदिर की खास प्रणाली के अनुसार भजन गाया जाता है। महात्मा सूरदास, नंददास ऐसे भक्तों के रचित पद, राग–रागिनियाँ में गाते हैं। दूसरा मंदिर श्रीयुत बाबू कामेश्वरप्रसादजी

रईस का नीचीबाग में है। यहाँ नित्य सायंकाल भजन–भाव होता है। रामनाथजी के तबले की संगत, गाने की रंगत को दूना बड़ा देती है। खड़े भक्तों को बैठा देती है। श्रावण में झूले के अवसर पर देखिये कैसी छटा है, संगीत की नित्य नई घटा है। कभी ध्रुपद है, कभी ख्याल है, सुनने वालों का अजब हाल है। कभी जल तरंग, नस तरंग दिल मसलते हैं, कभी सितार और सरोद से हृदय के तार हिलते हैं।

आगे देखिये– आदि विश्वेश्वर पर श्री सत्य–नारायण का मंदिर है, यहाँ भी नित्य भजन होते हैं, शहद की मक्खियों की तरह रसिक भक्त इधर–उधर बैठे रहते हैं, हार्मोनियम–तबले का साज है, जिसकी बुलन्द आवाज है, अनेक गायक अपनी इच्छा से भी आकर संगीत की सेवा करते हैं. कभी–कभी तबले पर छमाछम घुँघरू की आवाज़ नाच का भ्रम पैदा करती है, राह चलतों को खींचती है। आइये पुण्य–सलिला श्रीगंगा तट पर देखिये। यह महाराज ग्वालियर के दीवान साहब का जड़ाऊ मंदिर है, यहाँ कार्तिक के पुनीत महीने के अन्तिम पाँच दिनों में भीष्मपंचक पर प्रातः काल से दोपहर तक श्री ठाकुरजी के सामने बड़े समारोह और प्रेम से गाना–बजाना होता है। भैरवी, टोड़ी, आसावरी इत्यादि की विचित्र बहार है, सुनने वालों की भरमार है, स्त्री–पुरुषों का रेला है, शोर और संगीत का झमेला है, कर्ण–रसिक टूटे पड़ते हैं, हाथ से जल के लोटे और गीली धोती के बंडल छूटे पड़ते हैं। गंगा स्नान करके दर्शकगण आते हैं, नेत्र और कर्ण पवित्र कर घर जाते हैं। जिस दिन कोकिलकंठी वारांगनाओं का दंगल है, उस दिन श्रोताओं का अमंगल है, उधर से नजर के भाले हैं, इधर जान के लाले हैं। यह देखिए इसी मंदिर की बगल में महाराज ग्वालियर का सुप्रसिद्ध श्री लक्ष्मण–बालाजी का विशाल मन्दिर है। इस मंदिर में नीचे की मंजिल को छोड़कर ऊपर लकड़ी का पट है, इसका प्राचीन नाम बालाघाट है, यहाँ देखिये एक दक्षिणी पंडित खड़े होकर हाथ में तम्बूरा लिये हरिकीर्तन कर रहे हैं, हरिकीर्तन की प्रथा श्री शिवाजी के गुरु समर्थ श्रीरामदास स्वामी ने निकाली है। कदाचित् इसी कारण इसके गुणी पंडित दक्षिणी ब्राह्मण ही देखे जाते हैं। बड़ी सुन्दर प्रथा है। संगीत और हरि कथा है। मणिकांचन संयोग है, भक्तिरस का श्रोत है। श्रोताओं का हृदयओत–प्रोत है। इन कीर्तनकार पंडितों को दक्षिणी भाषा में बोवा कहते हैं। विष्णु बोवा, विनायक बोवा इत्यादि सज्जन यहाँ के प्रसिद्ध कीर्तनाचार्य हैं। प्रथम एक भजन गाना प्रारम्भ करते हैं।

भजुमन राम चरण सुखदाई,
जा चरणन से निकलीं सुर–सरि शिव के जटा समाई,
जटा शंकरी नाम परो है, भव सागर को तारन आई।

फाल्गुन कृष्ण द्वितीया को श्री रामलीला की पंचक्रोशी यात्रा निकलती है। जंगल में मंगल करती है, जिसके प्रधान श्री झगाजी महाराज थे। उन्हीं के आशीर्वाद से अभी तक यह यात्रा होती जा रही हैं। इस यात्रा के साथ भी भजन मण्डली रहती है। जो प्रेमीगण हैं; पेशेकार नहीं, ढोलक–सितार पर गाते हैं। गाने की खास प्रणाली है, जो सबसे निराली है।

चलो गुइयाँ खेलि आईं होरी कन्हैया घर,

अपने अपने घर से निकसीं कोई साँवर कोई गोरी ।
एक से एक जोबन–मंद माती सबै बयस की थोरी।
कन्हैया घर ।

कार्तिक शुक्ला 11 से पूर्णिमा तक यही मंडली रामघाट पर एक प्राचीन राम मंदिर में रात्रि के समय भजन–भाव करती है। अन्य गुणियों को भी आदरपूर्वक निमंत्रित करती है।काशी में कसेरों का होली गान प्रसिद्ध है। ये लोगे होलिका–दहन के दूसरे दिन सायंकाल में होली गाते निकलते हैं। प्रत्येक गोल में एक जोड़ उत्तम शहनाई बजानेवाले होते हैं, जो प्रायः मुसलमान हैं।

मंदिर का सम्बन्ध व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास से है और संगीत का सम्बन्ध व्यक्ति के मनोरंजन से है। किन्तु संकट–मोचन संगीत समारोह में हर हर महादेव का जयघोष बनारसी छंद में होने से अध्यात्म व मनोरंजन को एक दूसरे से सम्बन्ध के विषय में सोचने को मजबूर कर देता है। मंदिर में संगीत समारोह का होना न केवल गाने–बजाने के लिए होता है, वरन् संगीत का मनन, चिन्तन, अभ्यास व अध्यात्मिक स्वरुप भी दिखलाई पड़ता है, यथा– सभी रागों की बंदिशें रामचरितमानस की पक्तियां होती थी।

चैत्रमास की पूर्णिमा एवम् दीपावली पर हनुमत्–जयन्ती के अवसर पर काशी के सिद्ध संकटमोचन मन्दिर के वृहद संगीत समारोह के आयोजन ने आज पूरे देश के कलाकारों के मानस–पटल पर अपना अमिट स्थान बना लिया है, जिसका श्रेय काशी के समस्त कलाकारों, प्रसिद्ध मृदंगवादक स्व0 अमरनाथमिश्र (महन्तसंकटमोचन) पदमविभूषण पं. किशन महारराज जी एवंपं. कमलमिश्रनेमिलकर प्रारभ्भ किया।

इस शहर की शक्तिपीठ देवी माँ दुर्गा (दुर्गाकुण्ड) मंदिर में विगत 25 वर्षों से पाँच दिवसीय संगीत का कार्यक्रम आयोजित हो रहा है इस कार्यक्रम के कर्ता–धर्ता प्रख्यात शहनाई वादक पं0 राजन प्रसन्ना जी है जो अपने साथ–साथ अनेक ख्याति प्राप्त कलाकार को इस प्रांगण में कार्यक्रम हेतु आमंत्रित करते हैं। वर्तमान में काशी के मन्दिरो में संगीत कार्यक्रम के रूप में संकटमोचन के बाद दूसरा प्रमुख कार्यक्रम है।

अधोरपंथ की विशिष्ट सिद्धपीठ 'कीनाराम स्थल', कबीरचौरा के निकट स्थित 'औघड़नाथ की तकिया' आदि विशिष्ट स्थानों के प्रति काशी के संगीतज्ञों एवं संगीतप्रेमीनागरिको को बड़ी सुदृढ़ आस्था रही। गुरु पूर्णिमा पर राजघाट कुष्ठसेवाश्रम के सिद्ध अघोरेश्वर अवधूत भगवान राम के दरबार में गुरू पूर्णिमा महोत्सव पर प्रख्यात गायना आचार्य पं0 जालपा प्रसाद मिश्र जी के नेतृत्व में अनेकानेक वर्षों तक सांगितिक कार्यक्रम चलता रहा, जिसमें काशी के अनेक प्रतिष्ठा परक कलाकार उसमें अपनी हाजरी

(उपस्थिति) प्रस्तुत करते रहे तथा लोगो की दृढ़ आस्था व संगीत की रात्रिपर्यन्त अविच्छिन्न संगीतधारा का प्रवाह विशाल जनसमूह के बीच देखा जाता था।

सर्वधर्म की राजधानी, सभी देवी देवता यहाँ विराजते हैः– आप कहें तो! किसके दर्शन करने हैं? 12 ज्योतिर्लिंग, 52 शक्तिपीठ, 56 विनायक, 12 सूर्य, नौ दुर्गा, नौ गौरी, अष्ट भैरव, विष्णु–माधव–केशव–नृसिंह–वराह सभी यहां विराजते है। सत्तुपुरी, चारधाम, सभी है। बौद्धों के आदिदेव की यह भूमि है। 4 तीर्थकरों का यह जन्मस्थान है। कबीर और तुलसी की लीला भूमि है। यह शिव काशी है, विष्णु काशी है, अघोर काशी है और नाथ की काशी है। धर्म जिज्ञासु हो तो शोध का यह सर्वोतम नगर है। बाकी काशी के भक्त समाज में कीर्तन, देवी जागरण, अखंड रामायण, बहुत प्रचलित है। लावनी भी काफी लोकप्रिय थी और गाने वाले लावनीबाज कहलाते थे। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने लावनी लिखी है और लावनीबाजों के बीच बैठकर गायी भी थी। एक और लुप्तप्राय विधा है। 'भड़ोआ' जो अब सुनने को नहीं मिलता'। कुछ महाराष्ट्री मदिरों में (यथा बालाजी) कभी–कभी 'हरिकथा' सुनने को मिल जाती थी।

इसप्रकार हम देखते है कि संगीत के विकास में मन्दिरों का अप्रतिम योगदान रहा है। काशी के मन्दिर का तो अन्योश्राय सम्बन्ध रहा है। काशी विलक्षण संस्कृति वाला शहर है। एक महाजाति, महासमाज,सभ्यता की शिष्टता का, उसके शास्त्रों, उसकी कलाओं, उसके आचारों, रहन–सहन के प्रकारों का प्रधान केन्द्र स्थान काशीहै। काशी नगरी सदा से ब्रह्मधानी, धर्मधानी ब्रह्मपुरी, धर्मपुरी प्रधानता रही।

संदर्भ सूची–

1. जायसवाल, के०पी०, *'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'*वाराणसी।
2. मोतीचन्द्र, (1985) *'काशी का इतिहास',* वाराणसी।
3. मिश्र, कामेश्वर नाथ (2018) *'काशी की संगीत परम्परा व संगीतजगत् को काशी का योगदान'*वाराणसी।
4. प्रेमचन्द्र (1933) *'हंस' (काशी अंक)*वाराणसी।
5. मेहता,भानुशंकर (1999) *'सो काशी सेइअ कस न'*वाराणसी।
6. विश्वकर्मा, ईश्वरशरण, (1987) *'काशी का ऐतिहासिक भूगोल'* नई दिल्ली।
7. सुकुल कुबेरनाथ, (1977) *'वाराणसी वैभव',* बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना।
8. सांकृत्यायन, राहुल, (1958) *'पुरातत्व निबन्धावली',*वाराणसी।।
9. शुक्ल व्योमेश (2023)*'आग और पानी'* नई दिल्ली ।